

क्षमा वीरस्य भूषणम्

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंधानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

क्षमा भाव वीरों का आभूषण कहलाता है। कायर व्यक्ति में क्षमा भाव को धारण करने की शक्ति नहीं रहती। मान लीजिए किसी ने आपको गाली दी यदि सुनने वाला भी गाली दे तो यह बदले की भावना है। तू-तू, मैं-मैं करने में बात बढ़ती जाएगी। जिसका परिणाम मारपीट और अन्त में पुलिस और न्यायालय किसी शरण होगा। यदि एक गाली देता है और दूसरा शान्त रहता है तो इसका मतलब यह है कि दूसरे व्यक्ति में सहन करने की शक्ति है। गाली या अपशब्द किसी का नुकसान नहीं करता। यदि जिसको गाली दी जा रही है वह गाली को अनसुनी कर दे तो गाली देने वाले को ही गाली लगती है। गाली देकर के अपनी जबान खराब नहीं करनी चाहिए।

महाभारत के प्रसंग के अनुसार शिशुपाल को सौ गालियां दी थीं। किन्तु भगवान श्रीकृष्ण ने कोई प्रतिकार नहीं किया। इससे अधिक गाली देने पर शिशुपाल का वध किया गया। यह भगवान श्रीकृष्ण की क्षमाशीलता को बताता है। भगवान श्रीकृष्ण ने उसे क्षमा कर दिया था किन्तु जब सीमा से बाहर हो गया तब उन्होंने उसका वध किया। शिशुपाल को उसके कर्म का परिणाम मिल गया। कंस ने श्रीकृष्ण पर अत्याचार की सीमा पार कर दी थी। अनेक कुचक्र चलाकर उसने श्रीकृष्ण को मारने का प्रयास किया। किन्तु जब पाप का घड़ा भर गया तो वह अपने पाप के द्वारा ही मारा गया। भगवान महावीर ने क्षमावृत्ति को धारण किया। उन्होंने अहिंसा के मार्ग को अपनाया। तपस्या के दौरान अनेक उपसर्गों को समभाव से सहन किया। इसका परिणाम यह हुआ कि महावीर से वे भगवान महावीर बन गये।

वीर पुरुष का आभूषण तलवार, कटारी, तोप या अस्त्र-शस्त्र तो हैं ही साथ ही साथ क्षमा भी उसका एक बहुत बड़ा शस्त्र है। ऐसा वीर जो बाहरी शत्रुओं से लड़ता है, उसके पास तीर कमान तलवार और आधुनिक अस्त्र-शस्त्र आवश्यक है। देश की सीमा पर रहने वाले सैनिक वीर हैं, उनके पास आधुनिक अस्त्र-शस्त्र इसलिए रहते हैं, क्योंकि वे देश की सीमा की रक्षा

करते हैं। लेकिन मनुष्य के अन्दर जो आन्तरिक शत्रु बैठे हुए हैं उनको नष्ट करने वाला महावीर कहलाता है।

इस जीवन में दो प्रकार के अन्धकार हैं। एक अन्धकार तो सूर्य के प्रकाश से नष्ट हो जाता है। किन्तु दूसरा अन्धकार जो मानव के अन्तःकरण में स्थित है, उसे सैंकड़ों सूर्य का प्रकाश भी दूर नहीं कर सकता। वह इतना गहन है कि जब तक वह अन्दर विराजमान रहता है मानव को किसी चीज का ज्ञान ही नहीं हो सकता। उस अन्धकार को दूर करने वाला सबसे बड़ा वीर है। वह अन्धकार हैं काम, क्रोध, मद, लोभ। इन चारों का एक ऐसा जोड़ा है जिसको दूर करने के लिए आत्मबल की आवश्यकता होती है। आत्मबल एक ऐसी शक्ति है जो हृदय के अंधकार को दूर करके ज्ञान का प्रकाश करती है। ऐसा ही मनुष्य महामानव कहलाता है। ऐसे व्यक्ति का अस्त्र क्षमा है।

महात्मा गांधी ने देश को स्वतन्त्र कराने के लिए प्रायश्चित्, असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, सत्य, अहिंसा और क्षमा का मार्ग चुना। यह ऐसा मार्ग है जो शत्रु के हृदय को परिवर्तित कर देता है। महान् वही होता है जो क्षमाशील हो, जिसमें विनम्रता हो, करुणा हो दया हो और दूसरों को अपने साथ ले चलने की शक्ति हो। क्षमा एक ऐसा धर्म है जो शत्रुता को शत्रुता से नहीं बल्कि प्रेम से जीतता है।

भगवान् महावीर जब त्रिशला मां के गर्भ में आये तो तीन ज्ञान मति, श्रुति और अवधिज्ञान उनमें पहले से ही विद्यमान था। जन्म के बाद उनकी प्रकृति ही कुछ ऐसी थी, जो साधारण बालकों में नहीं होती। राजपुत्र होते हुए भी सभी प्रकार के वैभवों को त्यागकर मानवता के कल्याण के लिए उन्होंने अपने जीवन में अहिंसा के मार्ग को चुना और घोर तपस्या करके विश्व को सत्य का दर्शन दिया। वह दर्शन था, जियो और जीने दो। क्षमाशील व्यक्ति ही इस मार्ग पर चल सकता है। चौरासी लाख जीव योनियों के कल्याण के लिए उन्होंने अपना जीवन खपा दिया। अपने विरोधियों को भी उन्होंने क्षमादान दिया। चण्डकौशिक को उन्होंने क्षमा कर दिया। इसीलिए महावीर भगवान कहलाये। उनके जीवन में राजप्रासाद का सुख महत्वपूर्ण नहीं था।

मानवता का कल्याण ही उनके जीवन का परम लक्ष्य था। भौतिक सुख-दुःख का मानव-जीवन में कोई स्थान नहीं। उसकी सम्पूर्ण चर्या आध्यात्मिक गुणों से परिपूर्ण होती है। जिसने संयम के मार्ग को स्वीकार कर लिया है, उसके जीवन में कठोर और मृदु संवेदनों का आना आवश्यक है। संयम के कठोर मार्ग पर चलने वाले साधक के जीवन में परीषहों का आना स्वाभाविक है, क्योंकि साधक का जीवन चारित्र की मर्यादाओं से बधा है। मर्यादाओं के पालन से मानव जीवन की सुरक्षा होती है। मर्यादाओं का पालन करते समय संयममार्ग से च्युत करने वाले कष्ट एवं संकट ही मानव की कसौटी हैं। इसलिये उन कष्टों को समभाव से सहन कर वह अपने आचार का पालन करे। साधक के लिये परीषह बाधक नहीं साधक होते हैं। मानव में क्षमाशीलता के दो प्रमुख आयाम होने चाहिए— अहिंसा और कष्ट सहिष्णुता। कष्ट सहने का अर्थ शरीर, इन्द्रिय और मन को पीड़ित करना नहीं, किन्तु अहिंसा आदि धर्मों की आराधना को सुस्थिर बनाये रखना है।